ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण में उद्यमिता का प्रभाव – सीधी जिले पर केन्दित एक अध्ययन

रमाकान्त पाण्डेय[1] एवं डॉ. पुष्पा सिंह चौहान[2]

[1] शोधार्थी, अर्थशास्त्र विषय, शोध केन्द्र, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक, अर्थशास्त्र (सेवा निवृत्त), प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence Author: रमाकान्त पाण्डेय

Received 22 Nov 2024; Accepted 2 Jan 2025; Published 10 Jan 2025

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में उद्यमिता गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण का परीक्षण इनके सामाजिक एवं आर्थिक आयामों के तहत किया है। यह अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के सीधी जिले की ग्रामीण स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं पर किया है। अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं का प्रतिचयन आकार 140 है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों तरह के आंकड़ों का उपयोग करके वर्णानात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गया है। अध्ययन में परिकल्पनाओं के सांख्यकीय महत्व के परीक्षण हेतु सांख्यकीय तकनीकी का उपयोग कर आंकड़ों का परीक्षण किया है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि उद्यामिता गतिविधियों को प्रारंभ करने के पहलुओं के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। उद्यमिता व स्वरोजगार की गतिविधियों से ग्रामीण महिलाओं में आय व व्यय की गतिविधि बढ़ती हैं। ग्रामीण महिलाओं में सशक्तीकरण होने से ये आत्मनिर्भर हो रही हैं। इस निष्कर्ष के निहतार्थ इस अध्ययन के महत्व पर चर्चा की गई है।

मूलशब्द: ग्रामीण महिलाएँ, उद्यामिता, सामाजिक सशक्तीकरण, आर्थिक सशक्तीकरण, सीधी।

परिचय

देश में आर्थिक प्रगति के बावजूद ग्रामीण महिलाओं की आय का स्तर कम है, शिक्षा व स्वास्थ्य तक इनकी पहुँच सीमित है, नौकरी के अवसर व सुरक्षा भी सीमित है। साथ ही इनके लिए भूमि और विरासत के अधिकार भी सीमित हैं। महिलाओं की जरूरतों के साथ–साथ इनके योगदान को महेशा नीति विकास और बजटीय विचारों में हाशियें पर रख दिया जाता है। अर्थात महिलाओं के साथ हमेशा भेदभाव किया जाता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं के लिए असंवहनीय विकास प्रथाएँ, जलवायु परिवर्तन एवं इनके खिलाफ हिंसा जैसे कई कारण हैं, जिनसे महिलाएँ आज भी अधिक प्रभावित व वंचित हैं। ऐसी स्थितियों के कारण महिलाओं और उनके परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ बढ़ता है। व्यापक संदर्भ में देखा जाय तो ग्रामीण महिलाओं की स्थिति असमानता, हिंसा व असुरक्षा की विशेषता वाले सामाजिक व्यवस्था के लक्षणों में से एक है। इस प्रकार महिला सशक्तीकरण की दृष्टि को वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के भीतर महिलाओं के लिए समाज में भागीदारी के लिए जगह बनाने के साथ आगे बढ़ना चाहिए। क्योंकि महिलाएँ ग्रामीण आबादी के हाशिए पर होने और इनके खिलाफ भेदभाव की जड़े गहरी जमी हुई हैं। इस तरह की बाधाओं को समाप्त करने में यह पर्याप्त नहीं होगा। महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए लोगों के मस्तिष्क व हृदय में और समाज की सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन की आवश्यकता है। वास्तव में, महिला सशक्तीकरण इस समझ से शुरू होता है जिसमें महिलाओं और पुरूषों की समानता सामान्य भलाई के लिए प्राप्त की जाने वाली एक वांछित शर्त से कही अधिक है। जिसका मूल आशय मानवीय वास्तविकता के आयाम से जुड़ा होना चाहिए। क्योंकि महिलाएँ व पुरूष मौलिक रूप से समान हैं, तो हमारे सामने लक्ष्य केवल कृषि और ग्रामीण जीवन की उन्नति के लिए महिलाओं का शक्तीकरण नही है। बल्कि महिलाओं का सशक्तीकरण एक नई सामाजिक व्यवस्था है। जिसके निर्माण में पुरूषों के साथ महिलाओं की पूर्ण भागीदारी होनी चाहिए। यद्यपि वर्तमान आर्थिक विकास के ढ़ाचे में महिलाएँ हाशिये पर हैं। महिलाएँ न तो पीड़ित है और न ही समाज में कम संसाधन वाली सदस्य हैं। वास्तव में, महिलाएँ गरीबी उन्मूलन और सामूहिक समृद्धि को आगे बढ़ाने के वैश्विक प्रयास में अप्रयुक्त क्षमता के सबसे बड़े स्रोत का प्रतिनिधित्व करती हैं।

महिला उद्यामिता को आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सरकार द्वारा मान्यता दी गई है। महिला उद्यमी अपने और अन्य के लिए नये रोजगार सृजित करती हैं और समाज को प्रबंधन, संगठन और व्यावसायिक समस्याओं के विभिन्न समाधान भी प्रदान करती हैं। हॉलांकि, ये अभी भी सभी उद्यामियों में अल्पसंख्यक का प्रतिनिधित्व करती हैं। महिला उद्यामियों को अक्सर अपने व्यवसाय को शुरू करने और बढ़ाने के लिए लिंग–आधारित आधाओं का सामना करना पड़ता है। महिलाएँ अक्सर संम्पत्ति का भेदभाव, वैवाहिक स्थिति, विरासत कानून तथा सांस्कृतिक प्रथाओं जैसी भेदभाव पूर्ण बाधाओं के साथ–साथ औपचारिक वित्त तंत्र तक इनकी पहुँच की कमी, सीमित गतिशीलता, सूचना व नेटवर्क तक इनकी पहुँच न होने से इनका उद्यम प्रभावित होता है।

महिला उद्यमिता, परिवार और समुदाय के आर्थिक उन्नति, गरीबी निवारण और महिला सशक्तीकरण में विशेष रूप से मजबूत योगदान दे सकती हैं। इनका यह योगदान देश के आर्थिक तरक्की व विकास को गतिशील बना सकता हैं। वैश्विक स्तर पर विकास के विभिन्न आयामों को प्राप्त करने में महिला उद्यमिता की व्यपाक भूमिका हो सकती है। विश्व के सभी देशों की सरकारे और साथ ही विभिन्न तरह के विकास संगठन, विभिन्न योजनाएँ, प्रोत्सहानों और प्रचार उपायों के माध्यम से महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। जिसके कारण ही आज ग्रामीण महिलाएँ उद्यम के क्षेत्र में सशक्त हो रही हैं।

साहित्य सर्वेक्षण

महिला उद्यमिता मूलतः महिलाओं को उनके उद्यम व व्यवसाय के संस्थागत विकास को मूर्तरूप प्रदान करने वाला गुण है। उद्यमिता

की संगठनात्मक संरचना उद्यम लगे व्यक्तियों की प्रगति व उन्नति से है। अध्ययन से संबंधित शोध साहित्य सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने में विभिन्न तरह के आयामों का परीक्षण कर शोध कार्य पूर्ण किये गये हैं। बरूआ, श्रीपर्णा बी. (2020) ने शोध अध्ययन में कहा कि महिला उद्यमिता को आज ग्रामीण और शहरी गरीबी की समस्या के समाधान की कारगर रणनीति के रूप में देखा जाने लगा है। आर्थिक विकास व स्थिरता में सुधार के पीछे महिला उद्यमियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी होना एक प्रमुख कारण है। शिक्षित कामकाजी महिलाओं की संख्या में लगातार हो रही बढ़ोत्तरी इस बात का परिचायक है कि वे आर्थिक रूप से प्रेरित होकर उद्यमों से जुड़ रही है। तंवर, एन. के. (2021) ने अपने अध्ययन में सुझाव ज्ञापित करते हुये कहा है कि महिला उद्यमशीलता तभी सफल होगा जब देश में लैगिंक असमानता को खत्म कर दिया जाय। इसी तरह श्रीवास्तव, मीनू (2021) ने शोध आलेख में स्पष्ट किया है कि महिला गृहणी होने के साथ–साथ एक कुशल शिक्षक, उद्यमी और प्रशसक भी हो सकती हैं। यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में महिलाओं का प्रमुख योगदान होता है। इसलिए इनका सशक्तीकरण अनिवार्य है। वस्तुतः भारतीय समाज में महिलाओं की प्रास्थिति, भूमिकाएँ और प्रचालित परंम्पराएँ, मान्यताएँ धीरे–धीरे बदल रही हैं। इसके लिए आधुनिक शिक्षा तथा व्यावसायिक गतिशीलता एवं आर्थिक रूचि में परिवर्तन विशेष रूप से उत्तरदायी हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख के निम्न उद्देश्य हैं–

1. ग्रामीण महिला उद्यामियों की जनसांख्यकीय व व्यावसायिक पार्श्वचित्र का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिला उद्यामियों के सामाजिक–आर्थिक सशक्तीकरण का विश्लेषण करना।
3. अध्ययन द्वारा प्राप्त अनुभवजन्य निष्कर्षो के आधार पर महिला उद्यमियों हेतु सुझाव ज्ञापित करना।

परिकल्पनाएँ

ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार द्वारा महिला सशक्तीकरण के पहलुओं के आकलन करने व इनका परीक्षण के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है–

1. स्वरोजगार से पूर्व और उसके बाद में महिलाओं की आय व व्यय, आय व बचत एवं व्यय व बचत के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
2. स्वरोजगार से पूर्व और उसके बाद में महिलाओं की आय व व्यय, आय व बचत एवं व्यय व बचत के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य के लिए वर्णनात्मक शोध अभिकल्प को अपनाया गया है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के सूचना स्रोतों से आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ें साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किये गये हैं। वहीं द्वितीय सूचनाओं को शोध पत्रिकाओं एवं उद्योग विभाग के परियोजना प्रतिवेदनों एवं इन्टरनेट से संग्रहित किये गये हैं। अध्ययन के लिए सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से कुल 140 महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। अध्ययन में अनुभवजन्य निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक आयामों का उपयोग किया है। इस तरह अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं के उद्यम को सशक्त बनाने के विभिन्न आयामों का विश्लेषण कर सुझाव ज्ञापित किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण महिला उद्यामियों के सामाजिक–आर्थिक आयामों से संबंधित आंकड़ों के साथ सशक्तीकरण सूचकांक के परीक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप सर्वेक्षण द्वारा आंकड़ों को प्राप्त कर उनका निर्वचन किया गया है। जिसका विवरण अग्रांकित बिन्दुओं में दर्ज किया गया है–

महिला उत्तरदाताओं की जनसांख्यकीय रूपरेखा

अध्ययन में कुल 140 महिला उद्यमियों से उनके जनसांख्यकीय स्थितियों से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित किया गया है। महिला उद्यमियों की ये जानकारी उम्र, शैक्षणिक योग्यता, वैवाहिक स्थिति, उनके परिवार का प्रकार तथा परिवार में कुल सदस्यों की संख्या से संबंधित है। जिसका विवरण तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित है–

तालिका 1: महिला उत्तरदाताओं की जनसांख्यकीय स्थिति

क्र.सं.	जनसांख्यकीय आयाम	सामाजिक–आर्थिक रूपरेखा	महिला उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	उम्र	30 वर्ष से कम उम्र	35	25.00
		30 से 40 वर्ष के बीच	52	37.14
		40 से 50 वर्ष के बीच	43	30.71
		50 वर्ष से अधिक उम्र	10	7.15
2.	शैक्षणिक योग्यता	अशिक्षित	9	6.42
		प्राथमिक शिक्षा	18	12.86
		माध्यमिक शिक्षा	35	25.00
		हायर सेकण्ड्री	70	50.00
		स्नातक व उससे ऊपर	8	5.72
3.	वैवाहिक स्थिति	अविवाहित	30	21.43
		विवाहित	110	78.57
		विधवा	00	0.0
		तलाक शुदा	00	0.0
4.	परिवार का प्रकार	एकल (नाभिकीय) परिवार	115	82.14
		संयुक्त परिवार	25	17.86
5.	परिवार में सदस्यों की संख्या	3 सदस्य से कम	26	18.57
		3 से 5 सदस्य	95	67.86
		5 सदस्य से अधिक	19	13.57

स्रोतः सर्वेक्षित आंकड़ें (साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा संग्रहित)

उपरोक्त तालिका महिला उत्तरदाताओं की जनसांख्यकीय स्थिति को व्यक्त करती है। तालिका के आंकड़े व्यक्त करते हैं कि अधिकांश महिला उत्तरदाता 30 से 40 वर्ष की उम्र की हैं, जो कुल उत्तरदाताओं की 37.14 प्रतिशत हैं। अधिकांश महिला उत्तरदाताओं के पास हायर सेकण्ड्री स्तर की शैक्षिक योग्यता है, जो कुल उत्तरदाताओं में से 50 प्रतिशत हैं। तालिका में अधिकांश महिलाएँ विवाहित श्रेणी की हैं, जो कुल चयनित महिलाओं में से 78.57 प्रतिशत हैं। इसी तरह अधिकांश महिला एकल अर्थात नाभकीय परिवार से हैं जो कुल उत्तरदाताओं का 82.14 प्रतिशत है। इनके परिवार में कुल सदस्यों की संख्या से ज्ञात हुआ है कि अधिकांश महिला परिवारों में 3 से 5 सदस्य रहते हैं, जिसका प्रतिशत 67.86 है।

महिला उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति

महिलाओं के स्वामित्व वाले कारोबार में विविधता लाने के उद्देश्य से इनके व्यावसायिक स्थितियों का आकलन करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची में तथ्यों व आंकड़ों को संकलित किया गया है। महिला उद्यामिता से संबंधित व्यावसायिक कारक महिलाओं के व्यावसायिक दक्षता व जागरूकता लाने में प्रोत्साहित करते हैं। जिसके कारण महिला उद्यमियों को अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में आत्मविश्वास बढ़ता है। तालिका 2 में अध्ययन क्षेत्र के महिला उत्तरदाताओं की व्यावसायिक रूपरेखा का विवरण दर्ज किया गया है।

तालिका 2: महिला उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति

क्र.सं.	व्यवसाय के आयाम	व्यावसायिक स्थिति	महिला उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	स्वरोजगार की प्रकृति	विक्रेता	25	17.86
		दुकान की मालकिन	20	14.29
		सिंलाई, बुनाई व कढ़ाई	38	27.14
		होटल/रेस्टोरेन्ट/ढाबा	12	8.57
		सेवा क्षेत्र	8	5.71
		खाद्य प्रसंस्करण	15	10.71
		अन्य उद्यम	22	15.72
2.	व्यवसाय का पूर्व अनुभव	हाँ	35	25.00
		नहीं	105	75.00
3.	कौशल उन्मुख प्रशिक्षण	हाँ	50	35.71
		नहीं	90	64.29
4.	व्यवसाय में निवेश की गई राशि (रूपये में)	रू. 2500 से कम	50	35.71
		रू. 2500 से 5000 तक	60	42.86
		रू. 5000 से 7500 तक	20	14.29
		रू. 7500 से अधिक	10	7.14
5.	व्यवसाय की जीवन अवधि	5 वर्ष से कम	25	17.86
		5 वर्ष 10 वर्ष की अवधि	95	67.85
		10 वर्ष से अधिक	20	14.29
6.	व्यवसाय के लिए समर्पित कुल समय	4 घण्टे से कम का समय	10	7.14
		4 से 6 घण्टे तक का समय	90	64.29
		6 घण्टे से अधिक का समय	40	28.57

स्रोतः सर्वेक्षित आंकड़ें (साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा संग्रहित)

उपरोक्त तालिका के आंकड़े महिला उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति को व्यक्त करती है। तालिका में महिलाओं के स्वारोजगार की प्रकृति के संबंध में अधिकांश महिला उत्तरदाता सिंलाई व कढ़ाई की गतिविधियों से संबंधित है, जो कुल उत्तरदाताओं का 27.14 प्रतिशत है। पिछले व्यवसायिक अनुभव के संबंध में ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत महिलाओं के पास पूर्व से उनके पास व्यवसाय संचालन का कोई अनुभव नहीं है। इसी तरह से कौशल उन्नयन प्रशिक्षण के बारे में अधिकांश महिला उत्तरदाताओं (64.29 प्रतिशत) ने ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है। व्यावसायिक गतिविधि में निवेश की गई राशि के संबंध में अधिकांश महिला उत्तरदाताओं ने रू. 2500 से रू. 5000 के बीच में निवेश किया है, जो कुल उत्तरदताओं का 32.86 प्रतिशत है। इसी तरह अधिकांश महिलाओं का व्यवसायिक जीवनकाल 5 से 10 वर्ष का है जो कुल उत्तरदाताओं का 67.85 प्रतिशत है। वहीं व्यावसायिक गतिविधियों के लिए समर्पित घण्टों की संख्या 4 से 6 घण्टे की अवधि का है, जिसमें अधिकांश उत्तरदाताओं का प्रतिशत 64.29 है।

महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति यहाँ के पुरूषों के मुकाबले बहुत कम है। महिलाओं को बैकिंग सुविधाओं और आर्थिक सहयोग से जोड़ कर इनके आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जाना चाहिए। विकास की प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव को समाप्त कर समाज में इन्हें समान अवसर प्रदान करना चाहिए। क्योंकि, महिलाओं की सुदृढ़ व संम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मजबूत समाज का द्योतक है। तालिका 3 में प्रतिचयनित महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति को व्यक्त किया गया है–

तालिका 3: महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

क्र.सं.	आर्थिक आयाम	आर्थिक स्थिति	स्वरोजगार के पूर्व की स्थिति		स्वरोजगार के बाद की स्थिति	
1.	पारिवारिक मासिक आय (रूपये में)	रू. 2000 से कम	34	24.28	9	6.43
		रू. 2000 से रू. 3000 तक	56	40.00	51	36.43
		रू. 3000 से रू. 4000 तक	30	21.43	44	31.43
		रू. 4000 से रू. 5000 तक	12	8.57	23	16.42
		रू. 5000 से अधिक	8	5.72	13	9.29
2.	मासिक व्यय (रूपये में)	रू. 1500 से कम	20	14.28	17	12.14
		रू. 1500 से 2000 तक	54	38.57	43	30.71
		रू. 2000 से 2500 तक	36	25.72	40	28.57
		रू. 2500 से 3000 तक	16	11.43	22	15.72
		रू. 3000 से अधिक	14	10.00	18	12.85
3.	मासिक बचत (रूपये में)	रू. 500 से कम	9	6.43	5	3.58
		रू. 500 से रू. 1000 तक	70	50.00	54	38.57
		रू. 1000 से रू. 1500 तक	39	27.85	46	32.85
		रू. 1500 से रू. 2000 तक	15	10.72	22	15.72
		रू. 2000 से अधिक	7	5.00	13	9.28

स्रोत : सर्वेक्षित आंकड़ें (साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा संग्रहित)

उपरोक्त तालिका के आंकड़ें चयनित अध्ययन क्षेत्र के महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति को उनके स्वरोजगार शुरू करने के पूर्व और स्वरोजगार प्रारंभ करने के बाद की आर्थिक स्थितियों के सुधार को दर्शाती है। मासिक परिवारिक आय के पहलु के संबंध में स्वरोजगार शुरू होने से पूर्व जहाँ रू. 3000 से रू. 4000 आय समूह वाली महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 21.43 था, वहीं स्वरोजगार प्रारंभ करने के बाद यह प्रतिशत बढ़कर 31.42 प्रतिशत हो गया है। स्वरोजगार प्रारंभ करने से पूर्व रू. 4000 से रू. 5000 आय समूह वाली महिलाओं का प्रतिशत जहाँ 8.57 था, वहीं स्वरोजगार प्रारंभ होने के बाद यह प्रतिशत बढ़कर 16.42 हो गया है। इसी तरह रोजगार प्रारंभ करने से पूर्व और उसके व्यय प्रतिरूप में भी काफी हद तक वृद्धि दर्ज की गई है। बचत के संबंध में स्वरोजगार से पूर्व रू. 1000 से रू. 1500 आय वर्ग की महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत जहाँ 27.85 प्रतिशत था, वहीं स्वरोजगार प्रारंभ करने के बाद महिलाओं का प्रतिशत बढ़कर 32.85 प्रतिशत हो गया है। रू. 1500 से 2000 आय वर्ग की महिला उत्तरदाताओं की संख्या 10.72 प्रतिशत से बढ़कर 15.72 हो गया है। इसी तरह रू. 2000 और उससे अधिक आय वर्ग की महिला उत्तरदाताओं की संख्या 5 प्रतिशत थी वहीं यह संख्या बढ़कर 9.28 प्रतिशत हो गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वरोजगार कार्यक्रम शुरू करने के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति में सुधार

शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता से महिलाओं में नवीन चेतना का विकास हुआ है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है। आज महिलाएँ राजनीति, वाणिज्य–व्यवसाय, कला, खेल तथा रक्षा सहित सभी क्षेत्रों में नये आयाम गढ़ रही है। आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने से महिलाओं का सशक्तीकरण हुआ है। तालिका 4 में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में आय, व्यय व बचत में सुधार की स्थिति को व्यक्त किया गया है–

तालिका 4: महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार

क्र.सं.	आर्थिक स्थिति के कारक	आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ		आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ		कुल संख्या
1.	आय	109	77.86	31	22.14	140
2.	व्यय	116	82.85	24	17.15	140
3.	बचत	90	64.28	50	35.72	140

स्रोत: सर्वेक्षित आंकड़ें (साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा संग्रहित)

उपरोक्त तालिका में महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति में सुधार को दर्शाया गया है। आय के मामले में आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि 77.86 प्रतिशत महिलाओं की आय का स्तर बढ़ा है। वहीं व्यय के संबंध में 82.85 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति व्यक्त की है कि उनके व्यय के प्रतिरूप में बदलाव हुआ है। इसी तरह कुल महिला उत्तदाताओं में से 64.28 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने सहमति व्यक्त की है कि उनके स्वरोजगार से बचत का स्तर बढ़ा है।

ग्रामीण महिलाओं में स्वरोजगार प्रारंभ करने से पूर्व और उसके बाद में आय, व्यय और बचत के कारकों के बीच के संबंधों को परिकल्पना क्र. 1 व 2 को आंकड़ों के आधार पर परीक्षण किया गया। उद्यमशीलता के मामलें में आय व व्यय, आय व बचत एवं व्यय व बचत के बीच सांख्यकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण संबंध है। महिला उद्यमियों की आय, व्यय व बचत के मामले में अध्ययनगत आंकड़े व तथ्यों से स्पष्ट होता है कि उद्यम शुरू करने से पूर्व और आद में इसके बीच महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक 1 की सार्थकता सिद्ध नहीं होती है। जबकि परिकल्पना क्रमांक 2 की सार्थकता सिद्ध होती है। अतः आय, व्यय व बचत के बीच सार्थक अन्तर है।

ग्रामीण महिला उद्यमियों का सशक्तीकरण सूचकांक का सत्यापन

ग्रामीण महिला उद्यमी नवचार और सुदृढ़ता की उज्जवल किरण बनकर उभर रही हैं। ये अपने स्वरोजगार को सशक्त बना रही है और अपने दूरदर्शी नेतृत्व से सभी बाधाओं को पार कर अपनी आर्थिक व सामाजिक स्थिति को बदल रही हैं। इनके उद्यम केवल व्यवसाय

ही नहीं है बल्कि ये दृढ़ संकल्प, रचनात्मकता और सशक्तीकरण की मिसाल हैं। इनकी उद्यमशीलता ने समाज के अन्य महिलाओं के लिए बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करते हैं। शोध कार्य की दृष्टि से तालिका 5 में ग्रामीण महिला उद्यमियों के सशक्तीकरण सूचकांक को व्यक्त किया गया है।

तालिका 5: ग्रामीण महिला उद्यमियों का सशक्तीकरण सूचकांक

क्र.सं.	सामाजिक सशक्तीकरण सूचकांक	महिला उत्तरदाताओं की संख्या					कुल सुख्या	कुल स्कोर	श्रेणी
		दृढ़ता से सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	दृढ़ता से असहमत			
1.	सामाजिक स्थिति	49	39	25	18	9	140	521	चतुर्थ
2.	स्वतंत्रता एवं स्वयत्तता	46	58	27	9	0	140	561	तृतीय
3.	अत्मविश्वास	63	60	7	6	4	140	592	प्रथम
4.	निर्णय लेने की क्षमता	40	19	8	44	29	140	417	पंचम
5.	आत्मनिर्णय	69	41	13	8	9	140	573	द्वितीय

स्रोतः सर्वेक्षित आंकड़ें (साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा संग्रहित)

उपरोक्त तालिका में ग्रामीण महिला उद्यमियों के सशक्तीकरण सूचकांक को सत्यापित किया है। प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि महिलाओं में आत्मविश्वास का स्तर, आत्मनिर्णय, स्वतंत्रता व स्वयत्तता, सामाजिक स्थिति तथा निर्णय लेने की क्षमता जैसे पहलुओं में काफी हद तक वृद्धि हुई है। सामाजिक सशक्तीकरण के विभिन्न आयामों के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिला उद्यमियों के सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। सशक्तीकरण से महिला उद्यमियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों, उद्यम प्रारंभ करने के बाद इनकी स्थितियों में सुधार हुआ है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

देश की आर्थिक स्थिति के उत्तरोत्तर विकास में ग्रामीण उद्यामिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्योंकि ग्रामीण उद्यमिता के विभिन्न आयामों से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजित होते हैं। इसलिए ग्रामीण समाज में लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनने में ग्रामीण उद्यामिता का महत्वपूर्ण स्थान है। हॉलांकि, महिला सशक्तीकरण की अवधारणा कभी खत्म न होने वाली बहस है, क्योंकि किसी भी समाज में महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति नहीं दी गई है, भले ही महिलाएँ जनसंख्या और श्रम शक्ति के बारबर अनुपात का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार न केवल महिलाओं की स्थिति में बल्कि इनके प्रति समाज के दृष्टिकोण में भी बदलाव लाना होगा। मूलरूप से, उद्यम स्थापित करने के लिए महिलाओं के पास बुनियादी स्वदेशी ज्ञान, कौशल, क्षमता एवं संसाधन है। अध्ययन परिणाम से स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण महिलाओं के बीच उद्यमिता के पहलु ने इनकी आय, व्यय व बचत के स्तर को स्पष्ट रूप से परिवर्तित किया है। इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं को और अधिक सशक्त बनाने के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि ग्रामीण महिलाओं में साक्षरता व शिक्षा के स्तर को बढ़ाया जाना चाहिए। स्वरोजगार एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिला उद्यमियों में जागरूकता के स्तर को बढ़ाया जाना चाहिए। साथ ही ग्रामीण महिला उद्यमियों को ऋण सुविधा के साथ–साथ इन्हें अपने उत्पादों के विपणन में सहायता भी प्रदान की जानी चाहिए। यदि उक्त सुझावों का पालन किया जाता है तो निश्चित रूप से समाज में महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

अभिस्वीकृति

प्रस्तुत शोध आलेख को पूर्ण करने में सीधी जिले के ग्रामीण अंचलों में रहने वाले उद्यमी महिलाओं के प्रति में आभारी हूँ। जिन्होंने शोध अध्ययन से संबंधित संम्पूर्ण जानकारी देने में कोई समस्या नहीं आने दी। साथ ही इस शोध कार्य में आव"यक जानकारी उपलब्ध करने हेतु मैं जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। यह अध्ययन सीधी जिले के ग्रामीण अंचलों में रहने वाली ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण व विकास हेतु समर्पित है।

संदर्भ स्रोत

1. अहिरवाल एस. पुरी, जैन जे. के.। महिला उद्यमिता और सरकारी भूमिका : वर्तमान परिदृश्य भारत के सदर्भ में, जे.ई.टी.आर. 2021;8(9):63–73।
2. बरूआ श्रीपर्णा बी.। महिला उद्यमियों हेतु अवसर और चुनौतियाँ, करूक्षेत्र, 2020 फरवरी, 17–20।
3. 3. फार्म अनीता डी., श्रीधरन आर.। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याएँ, आईजेस. 2013;2(3):52–55।
4. गुप्ता एस, अग्रवाल ए। भारत में महिला उद्यमियों के सामने आने वाले अवसर एवं चुनौतियाँ, आई.ओ.एस.आर.–जे.बी.एस. 2015;17(18):69–73।
5. माधुरी एन. बी.। महिला उद्यमिता आर्थिक सशक्तीकरण का जरिया, योजना, 2018 अक्टूबर, 48–51।
6. माल्याद्री जी. भारत के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका, इंण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च. 2014;3(1):104–105।
7. रूमानी वीना एस. खाद्य प्रसंस्करण में संलग्न महिला उद्यमियों का एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, 2008।
8. सिंह रणवीर. हिमांचल प्रदेश में महिला उद्यमियों की बदलती स्थिति, यूरोपियन एकेडमिक रिसर्च. 2014;2(4):5721–5446।
9. श्रीवास्तव मीनू. सामुदायिक विज्ञान शिक्षाः समानुपातिक महिला सशक्तीकरण की ओर सतत प्रयत्नशील, राजस्थान प्रताप खेती, 2021, 5–6।
10. तंवर एम. के., कुमार एल. कृषि उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तीकरण, राजस्थान प्रताप खेती, 2021, 7–8।